

આશા સહવાલે

1.248

ASHA ARCHIVES



सिद्ध

१

ॐ नमः श्रीवज्रवानाक्षे ॥ ॥ सिद्धा मथया विधि ॥ ॥ द्वायां सिद्धयूजा वि  
धिः ॥ ध्यानवासनं मधुलवाच ॥ ध्यानकलशः सरगमनः यचक्रकुरुः थायिआ  
दिनं स्थापनायाय धूनकाशः धवाय गुणमधुलः यचक्रगवरेभाधनसिद्ध  
थायः मूलमनुवायः विधित्थं पूजायायः पारुः कुरु पूजाः सट्यागिनीपू  
जाः वलि विधि ॥ मधुल स्थापनायाय ॥ मयनयेः सिद्धनयः देवयूजाः आ  
गवायूजाः कायकलकायः धनजुदिकायः मधुलथिल ॥ वज्रवानाक्षेदि

मथ

१

लियायः धनउपाध्यानं किनदं जूयु माणिका पूजायाय ॥ किनदं सखा मयः लाव  
ना ॥ गना मरुध निषय नजान सूर्यस्तु देवविश्ववज्रस्थितं कुरु कान किनदं क  
लकुरु विमने नि सध्व करवधु रुरुवज्रप्रको नय ऊलमनजाल विमान मरुध च  
कलरः सहकाला विमवज्र मयी रमि विलाय ॥ न मरुध मणि विवज्र सुख नूपा  
मय नाव साधु लोक विरुयाय निधमावज्र कुरु काना विमवज्र सुखस्तु रुरुव  
कालीनायालीरु च नदधय नाक्रान कुरु कुरु काना नलवमनि विमवज्र कव



सिद्धा. लयनिवनिजितजगविघ्नवन्दानिनी. पीत. हनिन. मूलसव्यनवव्याफवकु  
 २ ज्यादष्टाकटललहिक्काप्रमिमूरवमभुतगकटिलनकवर्धुनरिनरुमधुडा  
 ललाटस्यपंचकपालमालावलम्वितगलेदधुमिलः. सुधीनिरुमधसमूधुम  
 मेलव्याप्रनमोस्वनभनानीलोनकवलायगाईकलत्कपिलकसुल्लरुई  
 कादिनागनाजाकनमधुलावजघट्टम्वितकनास्यावेजमुखिदयंष्टवेल  
 मकनिष्ठादयभुलितप्रभुगनऊनीदियमितिउलाकविजयमूडायास्वारे

मथ  
 २

पुरुसमायनः सव्यकनास्यांमंकुअया. भावामास्यांकपालरवदांगदधनीगर्जत  
 हुंकानमूरवस्वरुतहुंकानात्यहृतनस्मिहिईअदिम्विघ्नानाकव्यहुंकानरुलि  
 तदभकारुषूसमयंयत॥ ॥ आ. पा. ध. निलाऊन. लाहाग्रिनका. लाने. न  
 कचन्दनं. यकनिनेखान. नकापालघो. दहिगय. पूष्य. नव्यय. पूष्य  
 न्यास. य. लो. घं. यु. नव्यय. ॥ आय. मरु. ॥ इ. ३ यधमो. वलि. अनाकन. ॥  
 न्निकिनदपूजा॥ कलभ. सग. मरु. मामकीपूजा. दवपूजा. दकृष्टविय



सिका.  
३

कं. ऊरुमानपनि सिद्धं किक ॥ धन सहस्रं ऊनयाय. वलि क्काय ॥ धन का ऊरु  
अनया हतय लचाय मूडा नय ॥ धन के खान रु रु लन संका वना ॥ म्या उ  
या विता व ऊ वाना ही नूया पुष्य या नानू यद वी नूय चा पु नू यं उ श्री स म्ब न नू यं  
विचि न्य. नस्मा रु सिं वा क व ऊं मयू धे ना शि नी ना रु न द व ना प्र व म्भ ॥ नि नो  
ऊन ॥ मूडा स खो रु रु ग म्भ ना व ना ॥ सह डी ऊ मयू धे ना शि न रु न द व ना  
प्र व म्भ य थ क मं च किक. कृ दु ल क ठि नू च क म र व ल अ ऊा ला मि ना रु व ल

मथ  
३

सम्व व व ना च ना भा घा ति द्वि नू या मा धि ति वि चिं प्र नु नु म हा रु न स ख न थ  
निल प्र व म्भ आ ला दि य नि न ना च का दि मू डा अ ऊा ला दि स् व ना वा व वं नि अ  
धि मू च्य ॥ धू य. नि नो ऊ न. पू ऊा ॥ गिका या धि रु न ॥ अ आः रु ॥ पू ऊा. धू य. दी  
प स व र द यं पुष्य न्या स ॥ य. ला. ध. म. न य्य द ॥ स्व स्व म नें द जा ये. व  
लि वि य ॥ प नो य वा न पू ऊा ॥ खान न नो ॥ धन गी क ॥ हा ड रु न द ॥ धु न्य ॥  
मू डा रु म द ॥ गी क ॥ धन २ ॥ मा ला या चू सि क्क न य ॥ मूल या रु स्म ल य न



सिका. ४  
ॐ श्रीवज्रहृन्नुक्कं हूं हूं रुद्रस्वाहा ॥ मूडाविरुषयत् ॥ व्याघ्रचर्म ॥ ॐ ३ सर्ववृद्ध  
अकिनीयवज्रवर्णनीयवज्रवेगाचनीयहूं हूं रुद्रस्वाहा ॥ चक्रि ॥ ॐ धन २ धन  
य २ मर्दय २ वज्रधुकं हूं हूं ॥ ॐ वज्रवेगाचनीयहूं हूं रुद्रस्वाहा ॥ गृद्धरुमना  
वीनचक्रि मूकाल्पात्मक ॥ कथुल ॥ ॐ वज्रधर्मसमयत्वे हूं नू २ आलालिक हूं  
रुद्रस्वाहा ॥ ॐ की हूं हूं हूं हूं ॥ ॐ गृद्धरुमनावीनकथुलामिगाल्पात्मक ॐ  
वज्रवज्रसत्त्वमूडयं वीहं न ध्यात्मसंस्थितं ॥ कछि ॥ ॐ वज्रसत्त्वगमाविधमयः

मथ.  
४

स्त्वनलधुकं रुद्र॥ ओं सर्ववृक्षपादि॥ गुरुदरुमनावीनकलिकनलसम्भवा  
त्मकं श्रीवज्रसत्त्वमुद्रयं वहिनेध्वात्मसंस्थितं॥ नूचकद्वयं॥ अस्वतपन  
मध्वस्यग॥ एहिहिजिनजिकं रुद्र॥ ओं हः नमोऽस्माहा॥ हं वा यट हं रुद्र  
रुद्र॥ ओं गुरुदरुमनावीननूचकं अस्वतपनसत्त्वमुद्रयं॥ गुरुदरुमनावीन  
जोः प्रह्लाधकं॥ ओं वं हां यां जो मां रुद्र॥ गुरुदरुमनावीनश्रीमद्यसिध्वा  
त्मकमेषलाश्रीवज्रसत्त्व॥ ओं श्रीवज्र हं हं नूचकपादिः सत्त्व॥ नोयूनवम



सिद्धा

ॐ

सुखमुद्युमाला ॥ पुनपाठ ॥ ॐ कनक्षचरुस्वाहं ॥ निमरुं धा ॥ इववांगउमनूया  
उ ॥ अतमाहगवनवीनवीनव्यनायप्यादि ॥ गृहदेरुमनावीनइववांगउमनू  
पाठकं श्रीवर्जसुख ॥ ॥ थनउकमूइवकोइवागमाओयोमूलंवागमासालकध्रुपः  
नाकानय ॥ थअं २कं पूष्यन्यासस्वानमालाऊनाथआभिलेसइववांगनथिस्यं  
जाय ॥ धूनकाअथअं २कं पूष्य ॥ इवालवलिदिय ॥ ॥ थनेमधुलप्रवमध्रु  
थासं ३चाकउलवाकं ॥ ॐ प्रविमधुहगवनमहासुखमाकपुनंसर्वसिद्धिसु

मथ

ॐ

रपदंयनमसुखारुमसिअर्थंऊहं वंहाः प्रसिद्धत्वं ॥ स्वाकस्वानमालाऊकंघानइवापा  
इवन ॥ ॐ वजाघाटयसमयप्रवमयहं ॥ थमंउनायिउगासुवन ॥ इवनवाता  
अस्वानमधुलसकाथरावनायायवाक ॥ ॐ थनमसुइवासयसुललितविला  
सनमामिनमितनमामिऊहं वंहाः हिहिहिहिप्रतिकृकसुमंऊलिनाथहाः ॥ नृ  
समडाकास्यस्वानथमकअमधुल ३चाकउलवाक ॥ आका ॥ आत्यादचिहृत्वाद  
नादिनिधनेयनः महावर्जसमयसुखमूकाप्रवजप्रसिद्धमसुर्वारुमहासि



सिद्धा.  
६

किमाहृष्योदिदवताः सर्ववर्जधनानां सा सिद्धिभयनमाकुरुः ॥ निर्दयिष्यन्  
नन्नायि सर्वनागानुनागान् ॥ तत्त्वमसिद्धमेतद्गवन्महानागमहानाग ॥ अतः  
शुद्धधर्माग्र्यादिमूकान् गतः ॥ समस्तसर्वस्माद्विस्तृत्य सिद्धमेतद् ॥ सर्वो  
रुममहासिद्धिमाहृष्योद्यमूढया ॥ ५५ ॥ सिद्धिवर्जमेतद्दुःखानुवर्जना  
लयनममे ॥ सर्वसर्वमनायापि सर्वसर्वहृदिस्थितः ॥ सर्वसर्वपिता चैव  
कामाय समयायिता ॥ येन सर्वेन सगुणं संप्रक्षीयायात्ममधुलं ॥ न न स

मथ.  
६

इतमनाथकामार्थयनियूक्त्यहं ॥ मधुलसक्तस्तनकं न ॥ प्रतिविम्बसमाधर्मा  
स्वकाशुघातनाविला ॥ अग्रकोनहिलायाचहृदकर्मसमूहव ॥ मत्कन ॥ ग  
थागतत्वनिर्यागाः ॥ निसृज्यनमधुलः ॥ प्रतिविम्बस्त्वनमिष्या सर्ववर्जस्वक  
र्मन् ॥ चूर्णकृतलोहिको गालकृत्य ॥ गङ्गास्यैहो ज्योतिर्वलि कृत्यामविश  
जितमः प्रीयमनृषधनाय ॥ जितमः प्रीयकसम्बनाय ॥ हृद्यवृक्षाद्युव  
लुगहनविषा ॥ भिरुक्तानकामनूयगङ्गाभादिचक्रवाटपङ्कतिपानेन वनक



सिद्धा. काकाभवन. मङ्गल. नमो नन्दारुवनि सललितं. सागनं तादवेषः ॥ हस्ताङ्गुलया  
नं नरुगुरुगवतं यमनृत्पुष्पनस्य ॥ अथिवायासासंस्तानचक्रविनेचयनिमि  
लसंति योगमहताः साधियस्य प्रथमदाविसानिनिजुनुवंस्वामिनीनिष्पन्न  
अथप्यात्मवद्यसमुच्चयति सुखं कल्पनाजालमुक्ताकूप्याहस्यप्रियमंभिनिमि  
विनये सङ्गुनु सर्वकालं ॥ ॐ नमः श्रीः यमनृत्पुष्पनस्य ॥ ॐ नमः श्रीचक्र  
सम्बनायः ॥ ॐ नमः श्रीचक्रसम्बनायः ॥ ॐ ॥ धर्मधराङ्गितदृष्ट्या नन्दः

मथ  
१

कालिका॥ काला॥ ऊगदाला कलाचने॥ जाउ॥ कमलासनरुठमक्षिवर्धना० क  
लंकमला॥ काला॥ सहजानन्दकालि॥ जाउ॥ निर्विकल्पादिनहृदया॥ ज्ञादेसूदनो  
काला॥ नरुतमहेश्वरकुमाना॥ स्वाकजाउं॥ कुमनपूरयके॥ देवज्ञाय॥ धनगीत  
विश्वसुनावुह॥ गोगे॥ अम्भारुनवि॥ योग्य० चस्पति॥ रक्षक॥ नमस्तुते  
मामिहूनमाहूनमाहूनस्वाहा॥ किंचिल्कल्पयनिग्रहगृहनिवग्नसायवद्रुगृह  
तन्नागसहस्रामिताचिनतयोयामाप्राप्ताय॥ न्त्थंसत्यथविषवद्धानयो

४५३



सिद्धा.  
८

चिरुविचित्रं नरा॥ विम्वं धामदयात्कं मेव न गुर्वन्दे मुदा सर्वदा॥ त्वाक नागगी  
त॥ हलनिन॥ योग॥ मय॥ गङ्गाविषर्जन॥ पादपूजा॥ अर्घ्य॥ ओं श्रीः प्रवत्का  
नायगुनूपस्त्रनायजं वज्राचार्याय सकर्मवजिनपादाय प्रणमिस्तुत्वाहा॥ द्रष्टु  
यजतय॥ धनदंताकाय॥ मूलतुष्टि॥ १४॥ क॥ नमस्तुते॥ किंचिदस्मत्पादि  
त्वा नाग॥ मूलतुष्टि॥ गीत॥ नागहर्त्रे वि॥ गलक्षानि॥ प्रमोहमद्युलभनूसेमूडा  
श्च न धनज्जुह्वनउदकवितुवडा॥ १५॥ प्रबुलजूनमिनूलाय नगयने २२५५ मथ.  
८

लपविहासयिः जिनगुधमाया॥ क॥ १४॥ धानिः ठियाविषय सर्वयका २ समूडननंग  
जिनचक्रचूनका॥ पवनदूयिरुदियादृष्टिर्नचिया २ कलयीवजाननः दहदिह  
दाह॥ ॥ सुगतहर्त्रे वाययाः तहायिनस्वध २ सूतनवज्जुह्वनः ०० या अचिंता  
लयवीधा॥ ॥ १४॥ क॥ यावनसर्वस्त्वाः संगहनसंगृहीता अन्नयावाजुना  
युजासंखदजावा उयेयादुकावाः नूणि॥ धावाः अन्नमिनावाः संगिनावाः नैवसं  
गिनावाः नामसंगिनावाः सर्वतस्त्वा मयामहामूडा मरुयेदप्रतिष्ठापयि

वा

संगिनावा २



सिद्धा.  
६

नव्या ॥ १ ॥ गीत ॥ नाग गन्धहेनवि ॥ माल मय ॥ शिखरवन कालि मन्त्राणि अनूनाय  
विनयवर्हि ॥ ५ ॥ नानेनवेकसत्त्व पनमध्वनधवर्हि ॥ ॥ नसि स हस्रकि न  
ददधसूयसहस्रवर्हि ॥ ॥ वेह्रुविह ननूयनविठ ॥ ॥ अनूनायनसत्त्ववर्हि  
॥ ० ॥ ॥ ॥ क ॥ नत्वा सर्वगन्धगता गुणगनाधनायना दारथ गुनूध्रविजासनेना  
महामिततत्त्वसत्तागदाभाग्रह ॥ अस्मृष्टवनवृद्धगोदमसमंसा नधननैतत्त्व  
तनानावर्ह नथागगादिनचनोदहं गथा कथनं ॥ त्वाक ॥ कादं ॥ माल ज्ञाय ॥

मथ.  
६

मातृका पूजा ॥ गीत ॥ नाग गन्धहेनवि ॥ माल एक माल ॥ अकान संज्ञा म पृथिव न ००  
उ ॥ तिलिय पादय अठिनांगहेनवा २ वृक्षा यनीपीता वाधु किना म च ॥ १ ॥  
हीय ॥ धूर्तिगजलदा ॥ ५ ॥ अगधयनिकुमान महा काल कृपा ल यागि  
नाग ॥ २ ॥ योग ॥ धतु मातृका शवना ॥ ॥ पूर्ववृक्षा यनीपीता अकान वीज  
प्रयागक्ष अस्मिनांगहेनवानाग कथनवृद्ध महायमनाग विराज्य ॥ आवाहन ॥  
अं वृक्षा यनी वृक्षा लाक देवत न २ ॥ धिं कु नू हं रुद्र साहा ॥ पूजा मरु ॥ अं रुद्र



सिद्धा-  
१०

बुद्धायेनमः॥ सुगतिः हि धूय कर्षून चित्तं पंचगन्धन॥ वस्तु धीत चखा॥ अद  
नकुनि॥ अजिध॥ हले तसि ॥ काचिकं लाभिमाभि॥ धनपूष्यमास॥ अत्रुका  
यनीयस्वाहा॥ अकानवीजायस्वाहा॥ प्रयागदुजायस्वाहा॥ अभितांगरेगवाय  
स्वाहा॥ पद्मेनागनाहेस्वाहा॥ अं ० ॥ दायस्वाहा॥ चंद्रायस्वाहा॥ यधर्मा  
मूकालमूख॥ दक्षिण॥ ल॥ मो॥ सि॥ वी॥ मि॥ पला॥ ध॥ मु॥ मि॥ च॥ ह॥ प्र॥ ह॥ य॥ र॥ व॥ न॥ क॥  
न॥ स॥ न॥ य॥ न॥ द॥ ग॥ न॥ द॥ य॥ न॥ क॥ ना॥ व॥ ज॥ न॥ जी॥ न॥ का॥ धु॥ द॥ धु॥ म॥ न॥ त॥ यी॥ ठ॥ रि॥ ता॥ वा॥ धु॥ कि॥ ॥ ॥

मथ॥  
१०

उसकरुनाधनाजलचनचरुअनामामहान् बुक्कानोडमहर्षिकागजवन्ध्याच्या  
दिशिवाधिनः॥ ॥ मयमासमस्य॥ पचावेधपूजेनीगुरुकु॥ स्वादरु॥ यीवन्नुन  
॥ ॥ कवर्गजाक॥ नादिनिरुधनेद॥ पियनपादपञ्चवडरुनवी २ नूडायनीरुधना  
नरुकनागा॥ गकलरुधमान॥ गर्जिगजलदा॥ ॥ ॥ अंगदगयमिगदि॥ यागा॥ उ॥  
रावता॥ उरुननूडायनीमिगककानवीज॥ कालागानिकुचडरुनवपूनागव॥  
के॥ ॥ मययालनागाविराव्य॥ आवाहन॥ अं नूडायनीसूनलाकादवतने २ अं प्र



शिका.  
११

हंरुद्रस्वाहा॥ धूप गुग्गु चत श्रीरवधु वसुस्वत जीस्वा तच्छाजा-तुगाति इइ मांस  
दाकेला जीमाधे रल चाकुधाला॥ वावलमधि॥ दीपकर्पूना॥ पूष्यत्यासु-ओमा  
हंरुद्रनोयस्वाहा॥ ककानीवेजायस्वाहा॥ कालागिनीकृतायस्वाहा॥ वडहेन  
वायस्वाहा॥ अरवपालनागनाजायस्वाहा॥ विष्णुवधायस्वाहा॥ ग्रहनायस्वाहा  
पं ला चं मुक्त नायजय मरु॥ ओं हंरुद्र मा हंरुद्रय नमस्वाहा॥ यधना अका  
लमूरव॥ दक्षिण माति मासि नेका॥ भुक्ति॥ यद्रुसा नोधिसेस्तिआप्यरुयद

मथ.  
११

पीतागअहिर्युतं नकरुकक चारुनचनयुविचक्रंतथघूर्तिन श्रीवाधिद्रुमद  
मूननमूरव श्रीगत्व सो संकनतिन्यं वाधेयतासुगक ने महालीमभमभानंम  
हने॥ ॥ मंघमासत्यादि॥ ॥ चवर्गगत विहानवनुरध अरुधपादयनूरुक  
रुनवा २०० दायनीकुं कुंमा ककारकनागम कोलाकला नदिगजलदा॥ ॥  
रावता॥ पांथिम ००० दायनीकुं कुंमवदधुला चकानवीज कोलाकलकं वनूरुधनूरुक  
हेनवविताव्य॥ आबोहन॥ ओं ००० दायनी सुनलाकादवतन २ श्रीधुद्रंरुद्र॥ धूपकुक







सिद्धा.  
१३

ॐ मांस स्थला नकाध्व रुल चयसि दीप गिसिचिकं खलु मधि चूकसिमा ॥ पू  
ष्यन्यास ॥ ॐ वा नाहि स्वाहा ॥ देका नवी ज्ञाय स्वाहा ॥ गुवला कोय स्वाहा ॥ कयिल रे नवा  
य स्वाहा ॥ कलिक नृगय स्वाहा ॥ यमाय स्वाहा ॥ कलं करे नवाय स्वाहा ॥ नाय जय  
मंग ॥ रुं रुं वा नाक्षे नमः स्वाहा ॥ दक्षिण ॥ सिद्ध ॥ मोसि मुखं ॥ यं लं घं कृति ॥  
याम्या कृष्ण मोषि धृत्य कथित दशो हि पाशमहा आनूठामयि चो सदति वेलवाने शंखो  
हि जिह्वाधियः ॥ कर्ना शेषमवर्नक प्रतिदितं चूतकले कोमहान्काल कुलादवर्जितयदः

मध  
१३

नानक कलंकान्था ॥ ॥ मधमांस स्यादि ॥ गवर्जजानं एकवृत्ता लोका नं ऊ पादय को  
ठरु नवा २ को मानि नका महाय मनागम अदृहासा प्रचक्षु ऊलदा ॥ ॥ रावता ॥ अ  
नको मानी नका गकान वीज अदृहास कृष्ण को ठरु नव कलंक वृत्त महाय मनागं विराज्य  
आवाहन ॥ ॐ को मानी काल कालो कादवगन २ श्री धृष्ट रुद्र स्वाहा ॥ धूप अग्न च नमो  
क वम काउं ॐ रु स्वां काउं ग गुगुनि खडा मांस कचिला पूलां काध्व रुल क  
वसि दिय पकाचिकं लङ् मधि कनकवृत्त ॥ पूष्यन्यास ॥ ॐ को मार्य स्वाहा ॥ ग



सि. का.  
१४

कारवीजाय स्वाहा॥ काललोकाय स्वाहा॥ काटभैरवाय स्वाहा॥ महपद्म  
नामै स्वाहा॥ अग्ने स्वाहा॥ अद्दहसाय स्वाहा॥ ताय ऊपमनु ॐ हूँ हूँ  
कोमार्पे ममः स्वाहा॥ दक्षिणा मानिक मोसि दाल विनि॥ पंतांघ्रि सुनि॥ अ  
ग्ने श्रीदहिने कमधुनु धनामनु क्रमात्ता न्वितारं काता वगथा सुधत्त धवत्तान  
ग्नामह नग्नक॥ घोवावा निधवन्नमा गऊ मूखा हा सो हहा ८४॥ मधुन नन्दिता  
तिकने उसा वि सनद अद्दहसाय स्वाहा॥ नै॥ मधमा सत्यादि॥ पवर्ग अने मा

मथः  
१४

ज

गृहदिति उ प्रकाति पादपं उन्नत नरेन वा श्वैस्सु विष्णुमा अनन्त नागा ल  
म्नि वन रुता सन पून धा उल्लया ॥ कुहा ॥ शावना ॥ नै॥ अत्यै हूँ वीष्णुमा पका  
रवी उर्याने उन्नत नरेन वा श्वैस्सु विष्णुमा अनन्त नागा विहाव्या॥ आवाहन  
॥ उा विष्णु वी विष्णु लोका देव न न २ ॥ अघं हूँ हूँ स्वाहा॥ धृषासा हूँ बाला ॥ च  
नक सुनि ॥ वहु वाड मूखा मासा विजा गुगुति चनामधि यंचा मृत्त मां स क  
पला कताथ हल अरु दीय हा मा चिकं प्रनिमधि ॥ धृष्यत्यास ॥ उा विष्णु वी



सि. हा.  
१५

स्वाहा॥ यकानुवीजाय स्वाहा॥ ऊयनि कृणाय स्वाहा॥ उन्मरुहे नवाय स्वाहा॥ अनेन  
नागे स्वाहा॥ नेऽसुः स्वाहा॥ लकीवनरुतामनाय स्वाहा॥ यलाः यः ताये रुयमं  
७॥ उं हं रुद्रे वसुधै नमः स्वाहा॥ यः अः रुद्राः यः ना॥ मोसिः लवं॥ मृति॥ रुद्रा  
मरुतकनेनीधनेतीयस्वातांभवनेति साधुभिचितयूनरुद्राविषुधेनोनतापिः  
नीलाकृति॥ यकानुवीजाय स्वाहा॥ यकानुवीजाय स्वाहा॥ यकानुवीजाय स्वाहा॥ यकानुवीजाय स्वाहा॥  
लकीवनगर्जने॥ वा॥ मयमांसलोदि॥ यवगर्जनात्तुल्यगृहवागं अर्जुनपादयः

मथ.  
१५

संहारहेनवाश्चामूर्त्तानकाः कलिकतागः धानाधकानावरुनजलदा॥ ध्रु॥ रा  
वना॥ वायुयेचामूर्त्तानकाः यकानुवीजं देवीकाटकं संहारहेनवउद्भवनवकं वा  
भुकिनागं विराज्य॥ आवाहन॥ उं वा मूर्त्तानका दवगने २॥ प्रहं रुद्र स्वाहा॥ ध्रु  
यः कृष्णः चतः अष्टस्रगन्धः वस्तुः नकाः आउचवस्वाः कीर्तनाः सुगतिमिधुमाह  
ती॥ मांसेः अकमालाचोक्त्यः रुद्रः वयसि॥ दीपंतिमिचिकं मथमाधिः ईडुम्बने  
दक॥ पूष्यः त्यास॥ उं वा मुमुक्षुय स्वाहा॥ यकानुवीजाय स्वाहा॥ देवकाटकणाय स्वा



सि.क्रा.  
१६

हा॥संहा नरो नवाय ॥ वासुकि नाग राजा यस्वा हा ॥ वायु व्यस्वा हा ॥ धाना धकाना यः  
स्वा हा ॥ यं. लो. धं. ॥ गायक य. मं. ॥ ओं हं हं चामुमुय नमः स्वा हा ॥ य. अ. दकि धं  
ल. लूलुगु ॥ मी सि उला ॥ मुनि ॥ वागा वाति सूर्यात कर्प्यन वधन नः भुरं कु नगु म  
नी वायु व्याकुलिको म हा नै गयति कु नाम हा कर्पुन ॥ म धा नित्य म वरु को धरु निना  
घा ना मृग स्यात्स हान ॥ राग हीति के ना ऊ उ म ग ना धा ना ध काने व सग ॥ ॐ ॥ मं ध  
मां स स्नादि ॥ अवे ग जिते. अ न र्ध ॐ ॥ न वे रु या दय. री य म र्ध न वे २ म हा ल भी

मथ.  
१३

१७५॥ अंखया ल नाग. किलिकिलिला वावर्ध जलदा ॥ ध्रु ॥ रावना ॥ उभा न म हाल  
भी स्वे ना सु कान वी ज. च निगु क गुं री व ध र न व. वरु क वरु. न क क ना ग वि रा व्य ॥ आ  
वा रु न ॥ ओ म हाल भी सु न ला का दे व न व २ भी पुं हं हं स्वा हा ॥ धूय. न स्या च न. इ व  
दान. वरु. अत. जी ल स्वा ॥ आ द न. चा कू जा. नु गु ति. स्या वी ऊ. मां स. दा क ला. स  
प च्चा च. रति ध. रु ल. व्या. दी य ध ल. च ना मा धि ॥ पू ष्य त्या सु. उ म हाल भी.  
स्वा हा ॥ सु कान वी जा य स्वा हा ॥ च निगु क जा य स्वा हा ॥ री व ध र न वा य स्वा हा ॥







सि.स  
१८

नवांतिक ॥ किं कनामिकागकाभिप्रीयमाहं चंद्रहिमः ॥ २ ॥ मूलका ॥ वृद्धव  
नमकाठदभयनंद ॥ अद्यानासर्वमानाक्षकृपप्रियत्वयाकनू ॥ ॥  
मूलकादं ॥ वृद्धववदवज्ञाय नृत्य ॥ गति ॥ प्रियप्रियनाथ ॥ दिगसयदकाय  
पूर्व ॥ नाग ॥ कामाद ॥ गाल ॥ वक्रकावे ॥ प्रियप्रियनाथ ॥ क्रियायिलसचियमि  
२ गेहस्वमुवने ॥ हनहिमिह ॥ १ ॥ आत्मानवजाकुक्षकारनूयभीनवर्ग  
विचिंम्य ॥ ॐ आलिरयेदचका मरुकारविष्णुय २ सर्वइष्टदवाधियानिमा ॥

मा क

मथ  
१८

नानुहं ॥ २ ॥ अक्षक ॥ अन्वकुसर्वविष्णायाकायवाकविरुसंदिनाम्रहंवजधना  
प्रिमानहोनेचकुप्रथाजक ॥ चेकनादिफवपूषानेस्त्रानयामिप्रिकायज्ञानल  
ययद्योदमकचिविभीर्यदुनान्यथा ॥ १ ॥ धनपौत्रकोस्यदिवधन ॥ ॐ सुम  
निस्रकुहुरु ॥ ॐ ॥ अचिकभनजा लघयअधूना २ हमनाहिवाल पांभूमिव  
कनक्ष ॥ योग ॥ अचिकाय ॥ ॐ एकभुचिकवजयदमहाकाररुज २ सर्वइष्टा  
नस्त्रानुहुरु ॥ ६ ॥ अन्वकुवधननामिह नुरुमकि २ अरुकारायायउ











सिद्धा.  
२९

शानकादं॥ अर्थ॥ पूजा दधयउ॥ पुनवृद्धवननृत्त॥ गीत॥ नाग॥ तमावनी॥ मा  
थ॥ हुं कानसंज्ञाग॥ १८॥ क॥ देवज्ञाय॥ वृद्धवतलिहावने॥ ॥ धनमालसाय  
मूलाचार्य अर्थननसुउहाउताकिनधरुजास्यमधुलप्रदक्रिध॥ वाक्के  
विकार्य॥ ॐ अर्थसननरुगवनायकचिंतकटपूटनाअरुंकनूधमवनथिमा  
नआरुचक्रप्रपूजय॥ विजयभदिकवयूमानिस्त्रानेयामिगिकायेकानलधय  
यदिमकभिदिभीर्यदृगनात्यथ॥ धनमाककोस्यपिहाउयाउ॥ नृत्त॥ गीत

मध.  
२९

नागरुनेवि॥ मालमय॥ ॐ रववधुकवजहुं कानकालिनाशिनिपूचाययियान२  
स्त्रुलपिअननमहाकाधने अर्थयविष्णुसमुहने॥ ५॥ घयघाटय२स  
वदृष्टाने कीलयहुंरुटयायहन२आवउकीलय वजधनआरु कायवा  
कचिरुकीलयनी॥ ३॥ विजसत्वआनाधियाने अनुरुनसिधियदमाकरु  
लद॥ ॥ पूर्वादिदानकाकाननने रिमाजनयति धाननूया२च॥ ६॥ य  
रिषमहाधमधमने देवाधियतिगदकीलयनि॥ धूवासाकिनघातार्य॥



सि.क्रा  
२२

पाग॥मय॥रावना॥पू॥पूर्वः॥आदिसगद्यनिवानानामाकर्षय॥कीनघ  
माकाटय॥ॐआःघघाटय२॥आदिसगद्यनिवानाक्षकीलय२॥कुं॥कुं॥  
६॥ॐ॥आयस्वाहा॥यं॥लां॥घं॥श्रुति॥पूर्वस्तनमथनंरिनांजनयुतिपूरे  
घोननूथेप्रचक्षुकाककुथुनमाम्यह॥१॥तर्प्यह॥सूक्तानि॥॥श्रीवि  
जसत्त्वो॥उरुनादिगदाने॥उलूकानननस्यामवर्धननू॥हमिनयना२॥नो॥  
गकनमहा॥ममन॥यकाधियोगिगद्यकीलयनि॥३॥उरुनयक्रासगद्य

मथ  
२२

पनिवानाक्षककर्षय॥ॐआघघघाटय२यक्रादिसगद्यनिवानाक्षकील  
य२॥कुं॥कुं॥६॥ॐकुवेनायस्वाहा॥यं॥लां॥घं॥श्रुति॥उरुनयक्रामानूटंमामव  
र्ध॥प्रलाकनंमहाक्रुसीमनूपांचउल्का॥प्रधमाम्यह॥॥श्रीविजसत्त्व॥  
पश्चिमदिगदाने॥मनानननं॥सिद्धेनानूनननूविकटनूपा२॥आलाकुलमहा  
॥ममन॥रुगाधियोगिगद्यकीलयनि॥३॥पश्चिमवनूक्षदिसगद्यनिवाना  
नामाकर्षय॥ॐआघघघाटय२वनूक्षदिसगद्यनिवानाक्षकीलय२॥



सिक्ता.  
२३

रुद्र॥ॐ ववूराय स्वाहा॥ पं. ला. घं. मु. ॥ यन्मि मनकवर्हं मागधियमिमर्द  
नेधो नाह हावदनं धना धानमाम्य ह॥ श्रीवज्रसत्त्व॥ दक्रिहादिगजा नं. ४५  
कनाननननकनकनिरुददं हा. घ घननादि २ कलंकलं नवमहाभमभन. प्रता  
धियमिगुहा कालयनी॥ ५५॥ दक्रिहा प्रताधियम्यादिसगहायनिवानातामाक  
वयन॥ ॐ आ घ घ घाटय २ प्रताधियमि यमादिसगहायनिवानातामा कालय  
२ रुद्र॥ ॐ यमाय स्वाहा॥ पं. ला. घं. मु. ॥ दक्रिहा हंमवर्हं गी कृता नदय्यहा

मथ.  
२३

निशं॥ धानघघदनादचनमामिभुकवाननं॥ ॥ श्रीवज्रसत्त्व॥ ॥ दक्रिहावन  
कोरहादवीयमगादि कृष्ण पिनाहा. प्रचक्षु नूपा॥ २ अट्टहासमहाभमभनन  
जाधियमिगुहा कालयनी॥ ५५॥ अग्नवधननादिसगहायनिवानातामा  
कालय २ रुद्र॥ ॐ अग्नय स्वाहा॥ पं. ला. घं. मु. ॥ अग्नोमान प्रहादवी कृष्ण  
पीतावहाधनी॥ देहमाधियमर्दचयमगादिनमाम्य ह॥ ॥ श्रीवज्रसत्त्व॥ ॥  
द्वितीयवनकोरहा यमइती न. पीता नूहातनू. कोरनूपा २ लकीवनइती सग. म















[illegible]

दत्तं शिखुवनवाया प्रचक्षुर्वीनं॥ ॥ वीनाधियमिसर्वरुयहनधं. प्रत्ययेऽम् च  
दिष्णन्तनमनसा २ सुवननयका. वन्दितयादं. सर्वसिद्धिभोकरुलदं॥ ॥  
योग्य॥ ६५॥ क॥ अर्वातिनिहितजानूसव्यहस्तचरेवङ्गताउग्नकनेमूष्टीगूर्ड  
नीष्णक्रिया॥ निविदिद्यन्तनीनंचेष्टुनूकेचक्षुचक्रसमयगुरुगवनविप्र  
हन्ताचलाय॥ ॥ स्फादं॥ धूनकावशृङ्गाञ्जुष. दक्षयनु॥ पून. तृप्त्य. गीति॥  
वाग. हरेष्टुल॥ माल. माथ॥ रुकानसेजागळ्. लनीलसमेष्टिदेहा २ पा.



सिक्का.  
२८

कालकालनसमयमि कालाकालानसमाकाला ॥ ३८ ॥ अयं तु अचल अतगम नूति  
खज्जयाधकनधनी २ अगतनाथ अगतनयासित महाकारनाया ॥ ॥ अवनितिहि  
नवा मज्जानूधानवदनतिलाचना २ ककनाकसखरयकन अखिलविष्णुह  
ना ॥ ॥ वक्राहनिहनमघवनाभनदय्यदहनधुवीना २ उष्टातिपीठितधनस  
यकिनधविषहना ॥ ॥ विविधिवलाहनधरविषदिब्यनलसुमानी २ अगतवा  
दिनसर्वसम्पत्तिस्तद्विवनरुलदायक ॥ ॐ ॥ योग ॥ ॥ ॥ के ॥ विष्णुम्वोऊ

मथ  
२८

दिनममधुलगताहुं कानवीगाहुवं उष्टारि यनियीठिताधनमहं घावाहहा  
सानन ॥ ३८ ॥ मासविनाजितदक्षिणकनयाधसुखननवन्दे श्रीवनचलुम  
हनावधमहकारमुदाहसदा ॥ ॥ धनचलुवीननअभिवाद ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
दोनयनसुखसुपरिसम्पन्ना अनाग्यसुखचंगसा ॥ काममाक्रमं प्राफसि  
हिसवदुयूनयून ॥ ॥ देवज्ञाय ॥ माकनलितकोय ॥ कादं ॥ मूलनृप ॥  
गीत नाग मधुमन ॥ गालहुं मान ॥ प्रमादिगादिदधमिसुखविमनेम











सिद्धा. लयि. महासुखनाया. चतुस्तय्यश्रयमनिथा ॥ ५२ ॥ नयायनीधमनपूर्ध, निधम. छि  
 ३१ उवनतयकुध्वनूयी २ सर्वविकल्पविध्वसनीदवी. अनूरुन हानवनदोयनी ॥  
 अमिगलमधुल उदयोधिति. कल्यातनमिचनूयधनी २ कनेतिकयाल. खचा  
 गधनी. प्रहानवनदहा ॥ ॥ दिगम्बनमकुटकध. चकीकुधुलकाधधनी  
 २ वृचकमखनयायलधनी. ग्रिव्यनूदननधिलमाला ॥ ॥ सर्वतथागमकु  
 तनीदवीविनाहितरावअसावे २ छविजयागिनीचनेहाधिलगनधनी. गव

सथ.  
३९

[illegible]



सिका.  
३२

सूर्यमण्डलमाज्यमांवेदे मूकृति २ वज्रमणिनिविहृषिता ॥ ॥  
सतगुनचनरसमिलगतधवा २ वज्रवानाहि नुश्याय अनदम ॥ ६०० ॥ वागम ॥  
रस ॥ निर्मानानिदिनमममलुगगाकायादेव हर्षवृत्तप्रकाशाईलाहलनम  
मधवास्त्रभाकसूजायमा ॥ विद्यावृद्धकदम्बकदहमियाचक्रुज्यारुदनी  
सानंदालिलनाममसूनगावानाहिकाचंगमि ॥ २ ॥ लिनकायदडाकात्यमा  
कतं ॥ धनपंचधनाहायेक ॥ यागिनीपितमूजातिथमूलवागममाल ॥ एकमू

मथ.  
३२

खकावागकधूपकामखलातय गीत ॥ कोला ॥ धनवेधननदुय ॥ गीत ॥ सर्वव  
द्र ॥ हाजरनद ॥ रसक ॥ चक्षुलिकनलीलयोतिरुयदाइलालिनाविध्वरुविध्व  
रनीमहासूखविनचयलीलसुहादादयो ॥ मूलाजायनायतिवृति यदप्राफा  
विधकुरुयोनागद्रागवृते हयचसहजानरायवदामह ॥ दधय ॥ पावेक  
मनसालिग्रहनकोमानी पूजा ॥ पंचसुकाजानक ॥ मिष्टाधिवासन ॥ मगुल  
धिलखानतने ॥ पूरुयाय ॥ सगनय ॥ दकृष्ट ॥ पूजा ॥ कोमानीकाय ॥ दगुसम



सिद्धा.  
३२

य॥ कमानियासिधुनिय॥ बाहिलहियक॥ समयाचक्र॥ २४॥ साहति॥ कल॥ कि  
नक्षमोठिकाविसर्जनध्वय॥ धनसहानमधुलयातालकाय॥ वेलिछाय॥ ध  
नालिमूरुपननइहाउनेनृपकास्य॥ गति॥ ध्विनी॥ नागज्वउधि॥ तालमाथ॥  
ध्विनिसेनावनविनासायिकेयिसु२उथरनाउमधुलनाया॥ ध्रु॥ हज्जकान  
हमलजगतनिवासियाने॥ ॥ अमिय२निनंजनद२४२सहजसुन्दरीनाया  
जिनहनययि२४॥ ॥ उचउयागिती॥ यलमलमला२वज्जवोनाहज्जलिंगध

मथ.  
३३

कालः ॥ उपरुमां कनूदाकवावि २ ऊयं ऊयं अलिङ्गनीलवर्णवानि ॥ ६६७ ॥ पा  
गा ॥ २७७ क ॥ संपूर्णं सर्वं ऊगतमनानथयदं सर्वतनवादिना यीत्वा सर्वविकल्पमाहनका  
नदांजकिनीहनुकादिना ॥ यश्चक्रं यनिवर्णमङ्गितगुहास्तद्वयमाकयदं ॥ यस्यातस्य क  
पाहुनस्यमनसात्तुष्ट्यसंभयदिना ॥ ॥ धनदूजाकागाय ॥ भगवत्कनखदांगथिस्य धनक  
मूलाविष्कृतं ॥ गीतः ॥ सादभयय ॥ यलाघं मुन ॥ सताकन ॥ क्रमायन्त्र ॥ खऊतगोहयंत  
गुनसग्वनविथ ॥ दभयय ॥ धनयंचनासदउहय ॥ गद्यचक्र ॥ गीतराखन ॥ माकसिद्धि



सिका.  
३४

धनयस्यसिकामथयविधि॥ ॥धनकाहनवययिहाउय॥धनलि सतिषूनूपनिमा  
नथपूजाविधिधनय॥आदि.अन.वाहिलदंतनसायगीत॥यनिकननेपूजाधूनकाव  
सिकापूजायायनिमानथधनमकृणहियक॥मधुलयासिकानिय॥धनयागि  
नीमालकास्तविधि॥सगभन.माहनीधूनकोडा॥वाहिलहिय॥कनकाउकल्यागुल्येनि  
काय॥धन२॥धनयधनरिगहय॥गीत॥मालकायविकमनकाय॥समयावकडा  
उमानसगवनविधि॥गद्यचक्र॥राखन॥मुखमुद्रि॥स्नानकाकाय॥रथववलिवि

मथ.  
३४

या॥दधयग॥आभिर्वाद॥दीयदान॥ ॥होमिसिकामथपूजाविधिरुलसमाफः  
॥०००॥ ॥अंनमःश्रीवक्रसम्बनाय॥धनवेधननविधि॥वेधननलखस्यहय॥  
उयाध्याशंआहयलवास्तुकाकिफुपनस्यवेधनननय॥धनस्नानरुफालगस्यरान  
ना॥अंस्वरावकुआसर्वधन्नास्वरावकुआहंभुत्यताहानवजस्वरावयनमहानमयनिस्व  
रावयनमनस्वराव॥अनूकस्ययायमलनकुवभिनसिलीनयधन॥भुत्यताकनू  
धनरिन्नवाधिविक्लासकवनं॥स्वनूपहानेनस्ममयभिनसिचविशेय॥आकव



सि.क्रा.  
३५

क्षयायादि धूप निलंजन लाहानि नका ॥ स्नान ॥ भस्वादक पंचगव्य पंचगन्ध मकुलान  
पक्व नल मरु सतय ॥ हृष्टि धसाचि तय अरुन तउय क ॥ अरुन यतल वकुलादि  
॥ धूमि अरुन तहि यक ॥ धन काउ अरुन ल अन्धय दन विथ ॥ अच क्व वन्धन रे वने मा  
न ह ॥ पंच सलिन क ॥ अरुन तानिक वानी समया तिक माव हनु समन न कृष्ण सि  
द्धि व वज्र मृतादक थ थ ॥ सिद्ध अरुन ल स्नान माला कुमारी स्त्रु का दु २५ हिने  
कयाल स ॥ स्वाज पंचाक्ष कुंज लोसक ॥ कक्षा म्हा सुन न प्रिय न नापि व क्व वं सु रु र ग ॥

मथ.  
३५

हं महा सुखति ॥ धन य मरुं जन भिन सतय ॥ अरि धकं महा वज्र उ धनु क न मरु तं यथ  
हिग्नि धन य सतव ॥ मान के य २ ॥ धन पूजा या य ॥ चेत अरुन का स्नान न व य दि ॥ व  
ज्र विथ ॥ अनादि ना धन सत्व वज्र सत्व महान न ॥ सम न रु द स वा ला वज्र गरु प्र ति उ  
ति ॥ अति वज्र रि ध क ॥ धन य ध विथ ॥ गृहीता हि मया र ग व मयि स नि हि ना रु वः  
अति य ध रि ध कः ॥ चक्रं वे व र्धु स क लं द स्नाना थ न द स्व मे ॥ चक्र द व या न त्वं आ वा  
यै य नि क म मे च ॥ सम यं वृ द ना थ ना स त्व नं गु ष्ठ मूरु मं ॥ आ वा यै स्वा म्य हं ना थ सर्व



सिद्धा  
२६

सुखार्थकान्धतः॥ अहं महासुखमिति पाठयतः॥ पंचोपचानपूजा॥ पूष्यप्राभा॥ ओं कौं व  
ऊपूष्यं प्रति रुखाहा॥ ओं ह्रीं वरूष्यं प्रति रुखाहा॥ ओं ह्रीं वरूष्यं प्रति रुखाहा॥ यं सां  
यं मुक्तः॥ तायना कवजं नं भिन सधिस्यजाय॥ मरु॥ ओं अरुगय वाधुल मूसून भिन  
सजां जी ह्रीं॥ यधर्मा पादिसि रुलेय॥ मरु॥ अरुगय वाधुल मूसून भिन  
महं महानोथ महामाके पुनं वने॥ प. ला. य. म. रु॥ ताय अरुगय वाधुल मूसून भिन  
॥ सुफध॥ नं १॥ यरु सुहाहा॥ ओं नं नं नं मूसून यं ओं जी जी ह्रीं रुखाहा॥ यधमलुन काउखा

मध  
२६

नरुके॥ यनरुगु कस्य पुनत मरुकन॥ ओं अरुगय वाधुल मूसून भिन सजां जी ह्रीं॥ अरुगय  
नकिननक॥ ओं अरुगय वाधुल मूसून भिन सजां जी ह्रीं॥ अरुगय वाधुल मूसून भिन सजां जी ह्रीं॥  
काला॥ धून काउ मूसून वाधुल मूसून भिन सजां जी ह्रीं॥ अरुगय वाधुल मूसून भिन सजां जी ह्रीं॥  
ने॥ ॥ ओं नमः श्रीवज्रसुखाय॥ अरुगय वाधुल मूसून भिन सजां जी ह्रीं॥ अरुगय वाधुल मूसून भिन सजां जी ह्रीं॥  
मुक्त संमुक्त स्वामिन प्रभुः॥ १॥ यनरुगु कस्य पुनत मरुकन॥ ओं अरुगय वाधुल मूसून भिन सजां जी ह्रीं॥  
ध्वन विरू वायु महावला॥ २॥ कामद वहीन येव चंद सुख्य रयागहा॥ यधमलुन काउखा



सिद्धा. विरुद्धेव कुवनकुलयास्तथा ॥ ३ ॥ धर्मनाजास्तनागध्वगधर्वास्तनकिन्नराः ॥ जयसिद्धि  
 ३१ स्मितायवञ्जकतेष्टनिवाक ॥ ४ ॥ महानाजस्मितायवपनिमानायसस्मिता ॥ निर्मा  
 दानतिर्दवाध्वञ्जवास्तपकाभयत ॥ ५ ॥ मानिनीलाकध्वञ्जसहाध्वञ्जनिवाक ॥  
 वदुर्ध्यास्तस्मितायवञ्जिध्वञ्जक ॥ ६ ॥ राजनसत्त्वलोकाध्वञ्जगुणकास्तना  
 दय ॥ मृदितास्तस्मितायवविमलायागयानगः ॥ ७ ॥ अविष्मतिनिर्माध्वञ्जः अलायाक  
 पायदः ॥ धर्ममयानुसायवस्मितायगताध्वञ्ज ॥ ८ ॥ इवंगमासाध्वञ्जनिर्माध्वञ्जः

मध.  
 ३१

नाताथआर्यास्वाध्वनाध्वसंनूध्वञ्जकारध्वेवस्वञ्जिनिविधाननूयनी. अतननकतिर्य  
 चदवास्तनमनूयका ॥ ९ ॥ महामविधानतनः अथवंगरुमधुल ॥ १० ॥ स्मितावाकादि. महा  
 नाजायपस्तु ॥ दानयति ॥ अमृक ॥ निर्मिपुथीभिनाहतिप्रतिरुत्वाहा ॥ भिनंधुतावास्व  
 कंदूय ॥ गीत ॥ सर्वदूय ॥ अमृयाय ॥ बहातय ॥ अमृयाय ॥ अमृयाय ॥ अमृयाय ॥ अमृयाय ॥ अमृयाय ॥  
 विधि ॥ ॥ धनध्वनाकलभया ॥ रावना ॥ अंबजामृतादकथथरुतक २ महीतफस्वाहा ॥  
 वनाकाअमृतजलनूयविश्व ॥ अमृतिताध्वाननमरुतदवताचक्रचरुनसत्त्वमानि  
 ऊवा



न ३

सि. का.  
३८

यह दीक्षा किन क्षम मध्य मक्षु किनी जल नूयं विराव्य ॥ ॥ गुरु सत्त्व १०४० ॥ ॥ सु सु सु ३८  
सि. का. मथ या स सु सि द्र य का श ल ॥ ॥ लि धि तं व क्त च क्त म हो वि ह न या श्री व ज दे वी  
वन हार वित वि प्र वं ५ श्री व ज वा र्प जी व न ल र ल वि त ॥ ॥ गुरु ॥ ॥ ॥

आर्य समाज  
1.248  
ASMA ARCHIVES

मथ.  
३८